मुक्त बेसिक शिक्षा (प्रौढ़)

हिंदी (C-101)

स्तर-ग (कक्षा-8 के समतुल्य)

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

ए-24-25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62

नोएडा-201309 (उ.प्र.)

© राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

2016 (प्रतियाँ)

सचिव, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, ए–24–25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–62, नोएडा–201309 द्वारा प्रकाशित

सलाहकार समिति

अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

सहायक निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

पाठ्यक्रम-समिति

श्रीमती कुसुमवीर
पूर्व निदेशक
प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

श्री अजय बिसारिया
एसोशिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

डॉ. वेद प्रकाश
प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

डॉ. हीरा लाल बाछोतिया
पूर्व रीडर, एनसीईआरटी
नई दिल्ली

डॉ. बालकृष्ण राय
शैक्षिक अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान,
नोएडा

श्री हरपाल सिंह
वरिष्ठ सलाहकार
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान,
नोएडा

श्री दिनेश पुरोहित
पूर्व सामग्री-समन्वयक, राज्य-संसाधन केन्द्र, जयपुर

संपादक-मंडल

श्रीमती कुसुमवीर
पूर्व निदेशक
प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

डॉ. डी. एस. मिश्रा
पूर्व संयुक्त निदेशक
प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

डॉ. प्रेम तिवारी
एसोशिएट प्रोफ़ेसर,
दयालसिंह कॉलेज
दिल्ली

श्री मनोहर पुरी
वरिष्ठ पत्रकार
नई दिल्ली

श्री हरपाल सिंह
वरिष्ठ सलाहकार
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

श्री मती किरण गुप्ता
पूर्व पी.जी.टी.
केंद्रीय विद्यालय, दिल्ली

पाठ-लेखक

श्री लायक राम मानव
पूर्व समन्वयक, सामग्री-निर्माण
राज्य-संसाधन केन्द्र, लखनऊ

डॉ. अश्वघोष
पूर्व सलाहकार (सामग्री)
राज्य-संसाधन केन्द्र, देहरादून

श्री वीरेंद्र मुलासी
पूर्व समन्वयक, सामग्री-निर्माण
राज्य-संसाधन केन्द्र, लखनऊ

श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल
सलाहकार (सामग्री)
राज्य-संसाधन केन्द्र, जयपुर

श्री दिनेश पुरोहित
पूर्व सामग्री समन्वयक,
राज्य-संसाधन केन्द्र, जयपुर

श्री अरविंद मिश्र
संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय बचत निदेशालय,
उत्तराखंड, देहरादून
एवम् पूर्व निदेशक,
राज्य-संसाधन केन्द्र, उत्तराखंड, देहरादून

श्री हरपाल सिंह
वरिष्ठ सलाहकार
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

श्री कौस्तुभ पन्त
सेवामुक्त उप-प्रधानाचार्य
शिक्षा विभाग, दिल्ली

पाठ्यक्रम-समन्वयक

विवेक सिंह
शैक्षिक अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान,
नोएडा

डॉ. बालकृष्ण राय
शैक्षिक अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान,
नोएडा

डी.टी.पी. कार्य

मल्टी ग्राफिक्स
8/101, डब्ल्यू ई ए, करोल बाग,
नई दिल्ली - 110005

आपसे दो बातें

प्रिय शिक्षार्थी,

साक्षर भारत कार्यक्रम द्वारा समाज के असाक्षर महिला/पुरुषों को साक्षर बनाने के क्रम में मिली सफलता से प्रेरित होकर भारत सरकार ने नवसाक्षरों को जीवनपर्यंत शिक्षा उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया है। इसके लिए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा मुक्त बेसिक शिक्षा (प्रौढ़) कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम में 15 वर्ष से अधिक उम्र के उन महिला/पुरुषों को सम्मिलित किया गया है, जो साक्षर भारत कार्यक्रम में बुनियादी शिक्षा अर्जित कर चुके हैं।

इस कार्यक्रम के लिए 'क', 'ख' तथा 'ग' – तीन स्तरों पर स्व-अध्ययन पाठ्यसामग्री तैयार की गई है। ये तीनों स्तर क्रमशः औपचारिक शिक्षा की कक्षा 3, 5 तथा 8 के समकक्ष हैं। यह सामग्री आपकी ज़रूरतों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जो आप में स्वयं सीखने की प्रवृत्ति जागृत करेगी तथा आपको जीवनपर्यंत शिक्षा के पथ पर अग्रसर करेगी।

स्तर 'क' तथा 'ख' में हिंदी विषय के पाठ पढ़कर आपने पढ़ने, लिखने, सुनने और बोलने की जो दक्षता प्राप्त की है, उसे स्तर 'ग' की यह पुस्तक आगे बढ़ाएगी। इस पुस्तक को पढ़कर आपसे पत्र, कहानी, अनुच्छेद, निबंध आदि लिखने की दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।

इस स्तर पर पाठ के रचनाकारों का परिचय भी पाठ के साथ दिया गया है। साथ ही, प्रत्येक पाठ को इकाइयों में बाँटकर उनकी व्याख्या भी की गई है, ताकि पाठ को समझने में आसानी हो। बीच-बीच में मूल्यांकन पत्र भी दिए गए हैं, जिससे आप अपनी दक्षता का स्वयं मूल्यांकन भी कर सकते हैं। पुस्तक के अंत में एक 'नमूना प्रश्नपत्र' भी दिया गया है, जो वार्षिक परीक्षा की तैयारी करने में आपकी मदद करेगा।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक आपको रुचिकर और आकर्षक लगेगी; साथ ही, आपके पूर्व अर्जित ज्ञान को आगे बढ़ाने में उपयोगी सिद्ध होगी। मैं उन सभी विद्वानों और रचनाकारों का आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को तैयार करने और इसे रुचिकर तथा उपयोगी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुस्तक की सामग्री को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु सुधी पाठकों, विद्वानों तथा विशेषज्ञों के सुझावों का हम स्वागत करेंगे।

शुभकामनाओं सहित
पाठ्यक्रम-निर्माण समिति

मुक्त बेसिक शिक्षा (प्रौढ़) स्तर-ग

विषय-सूची

क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	भाषा की योग्यता/कौशल	जीवन-मूल्य	पृष्ठ-संख्या
1.	नर हो न निराश करो मन को	कविता	लिंग और वचन	निराशा से उबरना और उद्‌बोधन, समस्या-समाधान	1-10
2.	स्वरोज़गार	कहानी	वाक्य संरचना : वाक्य का अर्थ, वाक्य के प्रकार- सरल, संयुक्त, मिश्रित; अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार	गाँव से पलायन पर रोक	11-24
3.	प्रेरक प्रसंग	प्रेरक प्रसंग	संज्ञा, संज्ञा के प्रकार- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक	परिश्रम एवं ईमानदारी का सम्मान, भावों को संभालना	25-36
4.	मैं और मेरा देश	निबंध	सर्वनाम, सर्वनाम के प्रकार– पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक प्रश्नवाचक, निजवाचक	देशप्रेम	37-48
5.	तुलसी और रसखान के सवैये	कविता	पर्यायवाची शब्द	संस्कृति-बोध और कविता	49-60
6.	मूर्ख कौन	कहानी	विशेषण और उसके भेद– गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक	अंतर्दृष्टि का विकास	61-72
7.	लेखन-कौशल	लेखन	सृजनात्मक लेखन	रचनात्मक लेखन-कौशल	73-80
	मूल्यांकन पत्र-1				81-84
8.	ओडिशा की यात्रा	यात्रा-वृत्तांत	क्रिया और उसके रूप-अकर्मक क्रिया, सकर्मक क्रिया; काल की दृष्टि से क्रिया के रूप	संस्कृति व इतिहास-बोध का विकास, वर्णन-कौशल	85-100
9.	शहीद अशफ़ाक उल्ला खाँ	जीवनी	अव्यय और उसके भेद– क्रिया विशेषण, संबंधबोधक	त्याग, बलिदान और देशप्रेम	101-114
10.	बूढ़े की गवाही	कहानी	अव्यय और उसके भेद • समुच्चय बोधक • विस्मयादिबोधक • निपात अव्यय	परोपकार, कृतज्ञता	115-128
11.	संत कबीर और रविदास के पद	कविता	विलोम शब्द	आत्मबोध, भक्ति, तर्क-क्षमता	129-136
12.	कथा-लेखन	लेखन	सृजनात्मक लेखन	चिंतन, अंत:संबंध तलाशना रचनात्मक लेखन-कौशल	137-146

13.	ज्योतिषी की बात	कहानी	संधि एवं स्वर-संधि के भेद	कारण- कार्य संबंध की पहचान, विवेक क्षमता का विकास, अंधविश्वास का विरोध	147-160
14.	कुंभ का मेला	निबंध	समास और उसके भेद– द्वंद्व, द्विगु, तत्पुरुष, कर्मधारय, अव्ययीभाव, बहुव्रीहि	पर्यावरण, संस्कृति का बोध, सामुदायिक नैतिकता	161-170
	मूल्यांकन पत्र-2				171-174
15.	अब्राहम लिंकन का पत्र	पत्र	विराम-चिह्न और उसके प्रकार	सकारात्मक चिंतन, तनाव से उबरना, भावों पर नियंत्रण	175-182
16.	काँटों में राह बनाते हैं	कविता	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	विपरीत परिस्थितियों का सामना, संघर्ष की प्रेरणा	183-190
17.	प्रायश्चित	कहानी	वाक्यांश के लिए एक शब्द	अंधविश्वास का विरोध	191-202
18.	स्वस्थ जीवन	संवाद-लेखन	उपसर्ग और प्रत्यय	पर्यावरण का महत्त्व, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता	203-214
19.	हॉकी का जादूगर	जीवनी	वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का संशोधन	परिश्रम व लगन का महत्त्व, खेल और स्वस्थ शरीर	215-226
20.	पत्र-लेखन	पत्र-लेखन	रचनात्मक लेखन	लेखन-कौशल	227-238
	मूल्यांकन पत्र-3				239-242
	पाठ्यक्रम				243-248
	नमूना : प्रश्नपत्र				249-260

1

नर हो न निराश करो मन को

आपने ऐसे अनेक लोगों को देखा होगा जो जीवन की कठिनाइयों का सामना बहादुरी से नहीं कर पाते और निराश होकर बैठ जाते हैं। ऐसे लोगों को प्रेरणा देने के लिए यह कविता लिखी गई है।

यह एक उद्‌बोधन गीत है। उद्‌बोधन यानी लोगों को जागरूक बनाने के लिए कही गई बात। इसमें कवि ने हमें बताया है कि मनुष्य को सदा काम करते रहना चाहिए। उसे अपने मान-सम्मान का सदा ध्यान रखना चाहिए।

उद्‌देश्य

इस गीत को पढ़ने के बाद आप–

- मनुष्य-जीवन के कर्त्तव्यों की सूची बना पाएँगे;
- समय के सदुपयोग का महत्त्व बता सकेंगे;
- कठिनाइयों का सामना करने के तरीकों का वर्णन कर सकेंगे;
- जीवन में परिश्रम के महत्त्व का प्रतिपादन कर सकेंगे;
- लिंग और वचन की जानकारी दे सकेंगे।

करके सीखिए

किन्हीं दो महापुरुषों के नाम लिखिए, जिन्होंने मानव जाति के कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किए :

1. ....

2. ....

1.1 मूल पाठ

आइए, इस गीत को ध्यान से पढ़ें:

नर हो न निराश करो मन को

नर हो न निराश करो मन को
कुछ काम करो कुछ काम करो
जग में रहकर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिससे यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो न निराश करो मन को।

सँभलो कि सुयोग न जाए चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना।
पथ आप प्रशस्त् करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो न निराश करो मन को।

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्व कहाँ
तुम स्वत्व सुधारस पान करो
उठके अरमत्व विधान करो
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो न निराश करो मन को।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
सब जाए अभी पर मान रहे
मरणोत्तर गुंजित गान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को
नर हो न निराश करो मन को।

– मैथिलीशरण गुप्त

शब्दार्थ

जग	=	संसार, दुनिया	स्वत्त्व	=	अपना अधिकार
अर्थ	=	मतलब, उद्देश्य	सुधारस	=	अमृत
व्यर्थ	=	बेकार	अमरत्त्व	=	अमरता, अमर हो जाने का भाव
उपयुक्त	=	उपयोग के लायक			
सुयोग	=	सुअवसर, मौका	विधान	=	रचना, तय करना
सदुपाय	=	सही उपाय	दवरूप	=	प्रकाश के रूप में
निरा	=	केवल, पूरी तरह	निज	=	अपना
पथ	=	रास्ता, मार्ग	गौरव	=	गर्व, स्वाभिमान
प्रशस्त	=	आगे बढ़ाना, सामने	नित	=	हमेशा, नित्य
अखिलेश्वर	=	ईश्वर, परमात्मा	मरणोत्तर	=	मरने के बाद
अवलंबन	=	सहारा	गुंजित	=	गूँजना
तत्त्व	=	सार, साधन	गान	=	गीत
सत्त्व	=	साहस	साधन	=	तरीके, उपाय

1.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. यह गीत किसे संबोधित है–

   (क) नर को ☐ (ख) ईश्वर को ☐

   (ग) मन को ☐ (घ) कानन को ☐

2. सब कुछ नष्ट होने पर भी किसे सुरक्षित रखना चाहिए–

   (क) ध्यान को ☐ (ख) ज्ञान को ☐

   (ग) मान को ☐ (घ) गान को ☐

3. जग को क्या नहीं समझने के लिए कहा गया है–

   (क) व्यर्थ ☐ (ख) सपना ☐

   (ग) अखिलेश्वर ☐ (घ) सुयोग ☐

1.3 आइए समझें

1.3.1 अंश-1

नर हो .... अवलंबन को।

कवि कहता है कि हे मनुष्य! तुम अपने मन को निराश मत करो। निराशा से उपजे आलस्य को छोड़कर कर्म करो। मनुष्य के रूप में मिले जन्म को बेकार मत जाने दो। जो काम करते हैं, संसार में उन्हीं का नाम होता है। मनुष्य जन्म भी कुछ करने के लिए ही हुआ है।

यह जीवन जो तुम्हें मिला है, उसे व्यर्थ मत जाने दो। जीवन में मिले हर अवसर का उपयोग करो। यह संसार केवल सपना नहीं है, जो लोग इस संसार को सपना मान लेते हैं, वे बेकार बैठ जाते हैं। अत: तुम आगे बढ़ो और आगे बढ़ने का रास्ता खुद तैयार करो। ईश्वर भी उसी की मदद करता है, जो स्वयं प्रयास करता है।

यहाँ कवि मनुष्य को उत्साहित करता है और यह संदेश देता है कि हमें किसी भी परिस्थिति में निराश नहीं होना चाहिए, अपितु धैर्य और पराक्रम के साथ चुनौतियों का सामना करना चाहिए। यह भी संकेत किया गया है कि व्यक्ति को जीवन में सर्वदा कार्यरत रहना चाहिए। परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। व्यर्थ अथवा निरर्थक समय गँवाना मूर्खता है।

कवि कहता है कि जीवन में अच्छे अवसर हमेशा नहीं मिलते। उचित समय पर उचित कार्य करने पर सफलता और विजय अवश्य प्राप्त होती है।

पाठगत प्रश्न-1.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'कुछ तो उपयुक्त करो तन को' से आशय है–
   (क) शरीर के होने को सार्थक करो ☐ (ख) शरीर को संसार में बनाए रखो ☐
   (ग) शरीर के लिए कुछ करो ☐ (घ) शरीर को उपयुक्त सुख दो ☐

2. ईश्वर किसका सहारा बनता है?
   (क) निराश नर का ☐ (ख) मार्ग प्रशास्त न कर पाने वाले का ☐
   (ग) कर्म करने वाले का ☐ (घ) जग को सपना समझने वाले का ☐

1.3.2 अंश-2

जब प्राप्त ....मन को।

कवि मनुष्य को समझाते हुए कहता है कि तरक्की करने के लिए तुम्हें सब साधन इसी संसार में प्राप्त हैं। फिर भला तुम अपने साहस को कैसे छोड़ सकते हो! तुम्हारे पास हिम्मत है। इसी हिम्मत-रूपी अमृत को

पीकर तुम अमर हो सकते हो। कहने का अर्थ यह है कि ताकत के बल पर जो कर्म होगा, उससे जो सफलता मिलेगी, वह अमृत है। आगे कवि कहता है कि इस संसार-रूपी वन में तुम अपने कर्म से प्रकाश फैलाते रहो।

अंत में कवि कहता है कि तुम सदा अपने गौरव का ध्यान रखो। भले ही तुम्हारा सब कुछ लुट जाए, पर तुम अपने स्वाभिमान की रक्षा करो, ताकि मरने के बाद भी तुम्हारा नाम अमर रहे। इसलिए तुम अपने साधनों को कभी मत छोड़ो। मनुष्य होकर अपने मन को निराश मत करो।

कवि कहता है कि ईश्वर ने हमें सभी सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं, इसलिए लक्ष्य प्राप्त करना हमारा कर्त्तव्य है। अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर अमरता प्राप्त करो। इस संसार-रूपी बगीचे को सजाना-सँवारना तुम्हारा दायित्व है।

अपनी प्रतिष्ठा, मान, सम्मान आदि का ध्यान रखते हुए हमें श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए, ताकि मृत्यु के बाद भी लोग याद करें।

पाठगत प्रश्न-1.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. यह दुनिया किसकी तरह है?
   (क) आँगन की ☐ (ख) वन की ☐
   (ग) सुधा की ☐ (घ) प्रकाश की ☐

2. मृत्यु के बाद लोग याद करें, इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?
   (क) सभी साधन को त्यागकर कार्य ☐ (ख) अभिमान छोड़कर कार्य ☐
   (ग) स्वाभिमानपूर्वक श्रेष्ठ कार्य ☐ (घ) ज्ञानपूर्वक सभी कार्य ☐

1.4 भाषा-प्रयोग

यह कविता खड़ी बोली में लिखी गई है। दो पंक्तियों के अंत में तुकांत शब्दों का प्रयोग किया गया है; जैसे- अर्थ अहो- व्यर्थ न हो, तन को-मन को, तत्त्व यहाँ-सत्त्व कहाँ, सपना-अपना, मान रहे- गान रहे आदि। कविता की विशेषता यह भी है कि पूरी कविता में अधिकतर पुल्लिंग शब्दों का प्रयोग किया गया है; जैसे- नर, अर्थ, तत्त्व, कानन, सपना, अखिलेश्वर, मन, मान, गान आदि। आइए, अब लिंग और वचन के बारे में विस्तार से समझें-

लिंग

नीचे लिखे शब्दों को पढ़िए :

नर, लड़का, हाथी, बकरा, अध्यापक, ऊँचा- इन शब्दों को पढ़ने से आपको इनके पुरुष (नर) होने का बोध होता है।

अब इन शब्दों को पढ़िए :

नारी, लड़की, हथिनी, बकरी, अध्यापिका, ऊँची– इन शब्दों को पढ़ने से आपको इनके स्त्री होने का बोध होता है।

शब्द के जिस रूप से वस्तु की पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के प्रकार

लिंग दो प्रकार के होते हैं– पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।

1. **पुल्लिंग –** जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध हो, उनको पुल्लिंग शब्द कहते हैं; जैसे–
   तन, मन, पुरुष, मनुष्य, नाम, ताजमहल, नगर, पेड़, पर्वत आदि।
2. **स्त्रीलिंग –** जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो, उन शब्दों को स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं; जैसे–
   स्त्री, खिड़की, लड़की, नानी, नदी, कार, मेज़, कुर्सी, सुधा आदि।

हिंदी में लिंग की पहचान प्राय: वाक्य के क्रिया-शब्दों से होती है; जैसे–

वह जाता है। (पुल्लिंग); वह जाती है। (स्त्रीलिंग)

मेरा / मेरी, किसका / किसकी शब्द जोड़कर भी लिंग की पहचान होती है; जैसे–

मेरा बल्ला, मेरी पुस्तक, किसका कमरा, किसकी बहन।

नदी, बोली, भाषा, लिपि के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे– गंगा, अवधी, हिंदी, नागरी आदि।

पहाड़, देश, ग्रह, महीने, दिन, वृक्ष के नाम पुल्लिंग होते हैं; जैसे– हिमालय, भारत, शनि, फागुन, सोमवार, पीपल आदि।

वचन

नीचे लिखे शब्दों को पढ़िए :

माता, भेड़, बेटा, कुर्सी, इमारत, कार

इन शब्दों को पढ़ने से आपको किसी एक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है।

अब नीचे लिखे शब्दों को पढ़िए :

माताएँ, भेड़ें, बेटे, कुर्सियाँ, इमारतें, कारें।

इन शब्दों को पढ़ने से आपको इनके एक से अधिक व्यक्ति या वस्तु होने का बोध होता है।

शब्द के जिस रूप से संज्ञा की संख्या के बारे में पता चले, उसे वचन कहते हैं। संख्या में एक के लिए एकवचन, एक से अधिक के लिए बहुवचन होता है।

इस प्रकार वचन दो प्रकार के होते हैं– एकवचन और बहुवचन।

1. **एकवचन** – जिन शब्दों से व्यक्ति या वस्तु के एक होने का बोध होता है, उन शब्दों को एकवचन कहते हैं; जैसे– नर, जग, अखिलेश्वर, भव, मुसाफ़िर, छिलका, पुस्तक, तन, मन आदि।
2. **बहुवचन** – जिन शब्दों से व्यक्ति या वस्तु के एक से अधिक होने का बोध होता है उन शब्दों को बहुवचन शब्द कहते हैं; जैसे– घोड़े, खिड़कियाँ, स्त्रियाँ, पुस्तकें, मेज़ें, कमरे, लाठियाँ, फावड़े, कुत्ते, बिल्लियाँ आदि।

लेकिन, यह भी याद रखें कि कुछ शब्दों का प्रयोग केवल एकवचन रूप में ही होता है; जैसे– ईश्वर, तन, मन, जग, सुधा, ध्यान इत्यादि।

कुछ शब्दों को प्रयोग हमेशा बहुवचन रूप में ही होता है; जैसे- प्राण, दर्शन, आँसू, हस्ताक्षर, केश आदि।

1.5 आपने क्या सीखा

- मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिए। धैर्य के साथ कर्मपथ पर आगे बढ़ना चाहिए।
- जीवन में अवसर मिलते रहते हैं। हमें अपनी शक्ति का भरपूर उपयोग करके श्रेष्ठ कार्य करना चाहिए।
- शब्दों के जिस रूप से उनके पुरुष या स्त्री जाति के होने का पता लगता है, लिंग कहते हैं। लिंग दो प्रकार के होते हैं– स्त्रीलिंग और पुल्लिंग।
- शब्द के जिस रूप से उनके एक या एक से अधिक होने के बारे में पता चले, उसे वचन कहते हैं। वचन दो प्रकार के होते हैं– एकवचन और बहुवचन।

1.6 योग्यता-विस्तार

मैथिलीशरण गुप्त भारतवर्ष के प्रसिद्ध कवि रहे हैं। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के चिरगाँव में हुआ था। उनकी लगभग चालीस पुस्तकें प्रकाशित हैं। गुप्त जी की अधिकांश रचनाएँ राष्ट्रीय मूल्यों से ओत-प्रोत हैं। उन्हें राष्ट्रकवि का दर्जा प्राप्त है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों में 'रंग में भंग', 'भारत भारती', 'साकेत', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'जयद्रथ वध', 'विष्णुप्रिया', 'पंचवटी', 'किसान' आदि कुछ नाम प्रमुख हैं। आप इन पुस्तकों को पढ़ गुप्त जी की काव्य-रचना के बारे में और अधिक जान सकते हैं।

1.7 पाठांत प्रश्न

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

   (i) मनुष्य को निराशा छोड़कर क्या करना चाहिए?

   ....

   (ii) मनुष्य जन्म की क्या सार्थकता है?

   ....

(iii) कठिनाई में होने पर हमारी मदद कौन करता है?

....

(iv) हमें सदा किस बात का ध्यान रखना चाहिए?

....

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए :

	शब्द	बदला हुआ शब्द		शब्द	बदला हुआ शब्द
(i)	पुत्र	....	(ii)	नायिका	....
(iii)	हाथी	....	(iv)	अध्यापक	....
(v)	सास	....	(vi)	अच्छी	....

3. (i) वचन किसे कहते हैं? लिखिए :

....

....

....

....

(ii) नीचे दिए गए शब्दों के बहुवचन लिखिए :

शब्द	बहुवचन	शब्द	बहुवचन
बाँह	....	रात	....
बहन	....	नदी	....
लड़की	....	साड़ी	....
माता	....	दवाई	....
बिल्ली	....	टोपी	....
कपड़ा	....	गधा	....
रुपया	....	कविता	....